Vidya Bhawan, Balika Vidyapith
Shakti Utthan Ashram, Lakhisarai-811311(Bihar)

Class - 11th
Subject : Music

Teacher's name : Partha Sarkar
Date - 26.09. 2021

Syllabus related studies for P.A - 2 exam (2021 - 22)

संगीत में समान गति या चाल को **लय** कहते हैं। जैसे हमारे चलने फिरने, लिखने पढ़ने या बात करने इत्यादि में ऐसा देखा गया है कि कुछ शब्द हम शीघ्रता से बोलते हैं कुछ शब्द को धीरे से बोलते हैं। इन सभी क्रियाओं मैं अपनी गति होती है। संगीत में भी इसकी आवश्यकता होती है, इस गति को ही संगीत में लय कहते हैं।

लय और इसके प्रकार

*लय तीन प्रकार के होते हैं। **विलंबित**, **मध्य** और **द्रुत**। हम जब भी गाते बजाते हैं या नाचते हैं तो उस समय कोई ना कोई लय अवश्य रहती है। जब लय धीमी रहती है तो उसे निलंबित कहते हैं। जब लय साधारण रहती है तो उसे मध्य कहते हैं और जब तेज हो जाती है तो उसे द्रुत लय कहते हैं।*

घड़ी की सेकंड की जो गति है उसकी आधी गति विलंबित मानी जाती है। और सेकंड की लगभग दुगनी गति को द्रुत मानी जाती है। कोई भी गायक अपनी आवश्यकतानुसार लय को अधिक या कम कर सकता है।

थाट के सिद्धांत

1) थाट हमेशा **संपूर्ण जाति** का होना चाहिए। अर्थात थाट में सातों स्वर होने चाहिए। स्वर कोमल, शुद्ध या तिव्र कुछ भी हो सकता है।

2) थाट में सातों स्वर अर्थात सा के बाद रे , रे के बाद ग ऐसे सातों स्वर क्रम से होना चाहिए।

3) रागों की उत्पत्ति थाट से हुई है। लेकिन राग रागिनी की संकल्पना थाट से बहुत पहले हुई है।

4) थाट गाया नहीं जाता है।

5) उत्तरी संगीत प्रथा में थाटों की संख्या है दस — 1) **पूर्वी**, 2) **असावरी**, 3) **बिलावल**, 4) **खमाज**, 5) **कल्याण**, 6) **काफी** 7) **भैरव**, 8) **भैरवी**, 9) **तोड़ी**, और 10) **मरवा** ।